...और फैसला हो गया

शशि मौर्य

नगली गांव की ममता का विवाह चार साल पहले फतेहपुर गांव के विजय से हुआ था। दो भाइयों की अकेली बहन। मां बचपन में ही गुजर गई थी। शादी के बाद ममता ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे के जन्म के समय से ही वह बीमार रहने लगी। कुछ दिनों बाद उसे पिता अपने घर लिवा लाए। वहां उसका बच्चा मर गया। इसके बाद ससुराल से लेने आए, पर वह गई नहीं। इस बात को दो साल हो रहे थे।

गांव में महिला-समाख्या कार्यक्रम चला। मीटिंग होती थी जिसमें बहनें अपने दुख-सुख की बातें करतीं। ऐस ही एक बैठक में ममता का मामला सामने आया।

एक सच्चाई

दलित वर्ग का यह परिवार बहुत सम्पन्न नहीं है तो बहुत गरीब भी नहीं है। विजय एक सीधा सादा-सरल युवक है। ममता के मुताबिक उसने उसे कभी डांटा या मारा नहीं। फिर क्या कारण है कि वह नहीं जाना चाहती? ज्यादा कुरेदने पर ममता ने बताया कि उसका पति सीधा-सरल नहीं, दिमागी तौर पर कमजोर है। उसमें भावनाएं ही नहीं हैं। सास भी सीधी है। ससुर ने ममता को दवा में कोई ऐसी चीज़ खिला दी थी जिसके कारण उसे हरदम ससुर के पास रहना ही अच्छा लगता था। ससुर पास में खाट बिछाकर सोता था। विजय पर इस बात का कोई असर ही नहीं होता था। ममता ने बहुत संकोच के साथ बताया कि विजय को सम्बन्ध बनाना भी नहीं आता था। ममता को डर है कि पति उसकी रक्षा नहीं कर पायेगा और ससुर उसे छोड़ेगा नहीं। इस कारण वह पति से अलग होना चाहती है।

पांच महीने से इसी केस पर बातचीत चल रही थी। कोशिश यही थी कि परिवार न टूटे, पर ममता अपनी बात पर अड़ी रही।

फैसला हुआ

16 जनवरी को दोनों पक्षों को ब्लॉक ऑफिस में बुलाया गया। लड़की वाले डर रहे थे कि वे उसे उठा ले जाएंगे। लड़के वाले ममता को भी मीटिंग में बुलाने की ज़िद पकड़े थे। बहुत समझाने बुझाने पर वे दहेज का सामान लौटाने को तैयार हुए। दोनों पक्षों के करीब तीस-चालीस स्त्री-पुरुष आए। लोग हंस रहे थे कि ये औरतें क्या फैसला करवाएंगी।

माहौल तनावपूर्ण बना हुआ था। लड़के वाले लड़की से ही पूछना चाहते थे कि वह उनके साथ रहना चाहती है या नहीं। ममता को बुलाया गया और उसने सबके सामने कह दिया कि वह ससुराल में नहीं रहना चाहती।

दोनों पक्षों ने अपने सामान की सूची बताई जिसमें

से खाने पीने का खर्च हटा दिया। बात यहां अटक गई कि दहेज का सामान लेने लड़की वाले जाएं। लड़की वालों ने मना कर दिया। वे कह रहे थे कि यही ब्लॉक में लाकर दें। उन्हें मार-

पीट का डर था। अन्त में यही फैसला हुआ कि ब्लॉक आफिस से हम बहनें ही जाएंगी और लड़की वालों की गाड़ी में सामान ले आएंगी।

दहेज वापिस दिलवाया

हमारे गांव पहुंचते ही सब इकट्ठा हो गए। हमने अपनी बात शुरू कर दी। लड़के के पिता ने सामान निकालना शुरू कर दिया था। सामान निकालते-निकालते वह रो पड़ा। बहुत सहेजकर सब रखा था। उन्हें अपनी बेइज्जती महूसस कर रहे थे। सामान का लेन देन करके कागज पर हस्ताक्षर करवाकर दोनों का फैसला करवा दिया गया।

जीत की खुशी

सुबह से शाम हो गयी थी। सभी के चेहरों पर थकान थी, लेकिन खुशी भी कि फैसला हो गया। बाद में दोनों पक्ष हमें कुछ देने लगे—चाय-पानी को। मगर हमने मना कर दिया। सब हैरान थे कि बिना किसी स्वार्थ के हम इस केस में क्यों रुचि ले रहे थे। ममता के मुक्ति के अहसास से फूली नहीं समा रही थी।

इस केस की आसपास के गांवों में बड़ी चर्चा है। दहेज लौटाने की बात पर कई लोग बहुत नाराज है। उन्हें लग रहा है कि यदि ऐसा ही होने लगा तो सभी को सामान वापिस करना पड़ेगा। मगर दोनों पक्ष खुश हैं—उन्हें लग रहा है कि पुलिस की जिल्लत से बच गए। इस इलाके में छोटी-मोटी बात पर औरत को छोड़ देना, दूसरी शादी कर लेना आम बात है। दहेज की वापसी ने ऐसे लोगों को झकझोर दिया है। वहीं लड़की वाले खुश हैं कि सामान आ गया। जाने-अनजाने हमने एक समाज-व्यवस्था को छेड़ने का दुस्साहस किया है। □

अपना क़ानून अपना न्याय
हम बहनों ने लिया बनाय।